विविधा फीचर्स

द्वारा – विविधा : महिला आलेखन एवं संदर्भ केंद्र,
335, महावीर नगर II, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर–302018
फोन : 0141–2762932 ई–मेल : vividha_2001@yahoo.com वेबसाइट : Vividha.co.in संपादक – बाबूलाल नागा

अंक – 291 वर्ष – 13 **प्रकाशन सामग्री** 12 नवंबर 2013 से 28 नवंबर 2013

भूख व कुपोषण के खिलाफ एक साझा प्रयास

• बाबूलाल नागा •

वर्ष 1982 से मामोनी में आरंभ की गई संकल्प संस्था आज बारां जिले के सहरिया व खैरुआ समुदाय को जागरूक और सशक्त करने में काफी सफल प्रयासों के लिए चर्चित है। शाहाबाद व किशनगंज तहसीलों में बसे सहरिया व खैरुआ निरंतर शोषण का शिकार होते रहे पर आज वे बेहतर जिंदगी की नई राहें तलाशने लगे हैं। शोषित व उपेक्षित सहरिया व खैरुआ समुदाय के लिए संकल्प संस्था एक उम्मीद की किरण है। स्थानीय स्तर पर बढ़ती जिम्मेदारियों के साथ संकल्प ने कई राष्ट्रीय स्तर के अभियानों में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई। सूचना के जनअधिकार व खाद्य व पोषण कार्यक्रमों के बेहतर क्रियांवयन के अभियान में संकल्प की निष्ठावान भागीदारी नजर आई।

वर्ष 2002 के भीषण सूखे ने संकल्प के लिए नई चुनौतियां उपस्थित की। सहरिया समुदाय व अन्य निर्धन परिवारों में भूख व कुपोषण की समस्या इतनी विकट हो गई कि भूख से मौत के कई समाचार एक के बाद एक मिलने लगे। इन कठिन परिस्थितियों में संकल्प ने अपनी पूरी ताकत भूख के विरुद्ध एक सशक्त अभियान चलाने में लगा दी। इस अभियान में राहत कार्य को अधिक व्यापक व बेहतर बनाने, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को अधिक व बेहतर बनाने, सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुधारने, गरीब परिवारों को विभिन्न स्कीमों के अंतर्गत सस्ता व निःशुल्क अनाज देने व आंगनबाड़ी जैसे पोषण व स्वास्थ्य कार्यक्रमों को मजबूत करने पर जोर दिया गया। संकल्प ने स्वयं भी लगभग 40 स्थानों पर पोषण केंद्र आरंभ किए। भीषण सूखे की स्थिति में अनेक परिवारों को भूख से बचाने के कार्य में संकल्प की सार्थक भूमिका रही। वर्ष 2002 में ही सुवांस ब्रह्मपुरा और शाहाबाद ब्लॉक के कुछ गांवों में अकाल के दौरान मौतें हुई थीं जिसमें संकल्प संस्था व दूसरा दशक परियोजना ने काम करने की दिशा तय की। युवाओं के साथ मिलकर किशनगंज व शाहाबाद ब्लॉक में युद्ध स्तर पर लोगों को मदद पहुंचाने का कार्य किया। गरीबी और भुखमरी के कारणों को गहराई समझते हुए उसके निवारण के लिए काम किया। वर्ष 2004 में जब दोबारा भूख से मौतें हुई तब संगठनों के संघर्ष के परिणाम स्वरूप जंगलों को आजीविका के रूप में विकसित करने के लिए ''वन जन शक्ति कार्यक्रम'' सरकार द्वारा शुरू किया गया था जिससे हजारों हेक्टेयर वन भूमि को क्लोजर के रूप में विकसित करने का कार्य किया गया। गत वर्ष सुवांस गांव में कुपोषित चार बच्चों की मौते हुईं। संकल्प संस्था ने अन्य संगठनों के सामूहिक सहयोग से इस मुद्दे की पैरवी की गई। संकल्प ने युवाओं और महिलाओं के साथ भी काम करना शुरू किया। इसी प्रक्रिया के दौरान इस क्षेत्र में दो स्थानीय समुदाय आधारित महिलाओं के जाग्रत महिला संगठन व युवाओं के युवा शक्ति संगठन का जन्म हुआ। दोनों संगठन क्षेत्र में स्थानीय मुद्दों एवं समस्याओं के साथ साथ भूख व कुपोषण के खिलाफ मिलकर समझ बनाकर काम कर रहे हैं।

लोक कलाओं के माध्यम से कर रहे हैं प्रयास

सहरिया समुदाय में कुपोषण के प्रति अलख जगाने के लिए कठपुतली एवं नुक्कड़ नाटक को माध्यम बनाया है। इन लोक कलाओं के माध्यम से सहरियाओं को कुपोषण के प्रति सजग रहने का संदेश दिया जा रहा है। यह बीड़ा उठाया है बारां जिले के किशनगंज में कार्यरत गौड़ लोक कला संस्थान ने। संस्थान की कलाजत्था टीम द्वारा ग्रामीणों में कुपोषण के प्रति जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। किशनगंज क्षेत्र में कार्यरत सीकोईडीकोन संस्था द्वारा किशनगंज तहसील के गांवों में एसीएफ सहयोगी संस्था द्वारा किशनगंज तहसील के गांवों में एसीएफ सहयोगी संस्था फ्रांस के सहयोग से गंभीर कुपोषण का समुदाय आधारित प्रबंधन एवं क्षमतावर्धन कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसके तहत कुपोषण प्रबंधन एवं पूरक आहार पर गांव गांव में कलाजत्था कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। गौड़ लोक कला संस्थान के निदेशक अशोक गौड़ ने बताया कि किशनगंज ब्लॉक के भभूका, मोहदा, जगदेयपुरा, करवरीकलां, बामनदेह, हदीयादेह, खंडेला खेडी, लेहरूनी, करेरिया, सुवांस व दौलतपुरा गांवों में कुपोषण के प्रति जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हर माह आठ से दस कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। लगभग डेढ़ घंटे का एक कार्यक्रम होता है। नाटक, कठपुतली, गीत, के माध्यम से कुपोषण के प्रति सजग रहने व पूरक पोषाहार के बारे में संदेश देते हैं। ये कार्यक्रम रात्रि के समय गांव की चौपाल पर आयोजित किए जा रहे हैं। अब तक किशनगंज क्षेत्र में करीब 130 कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं।

बच्चों को घर पर पूरक आहार

सिकोईडीकोन संस्था द्वारा किशनगंज तहसील के 11 गांवों में एसीएफ सहयोगी संस्था फ्रांस के सहयोग से गंभीर कुपोषण का समुदाय आधारित प्रबंधन एवं क्षमतावर्धन कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है, जिसके तहत अप्रैल 2013 से क्षेत्र

जारी

से कुपोषण उपचार केंद्र (एमटीसी) से उपचार करवाने के पश्चात घर पर ही बच्चे को संतुलित आहार बनवाकर खिलाने के कार्यक्रम की शुरुआत की है।

सहरिया समुदाय में कुपोषण के प्रति अलख जगाने के लिए अब कोई बच्चा यदि कुपोषण उपचार केंद्र (एमटीसी) में भर्ती होकर अपना निर्धारित उपचार पूरा करता है तो संस्था द्वारा उसे एक माह तक संतुलित आहार के रूप में दलिया, खिचड़ी, हलवा तथा परमल के साथ दूध दिया जा रहा है। सप्ताह में तीन दिन दलिया, दो दिन हलवा, दो दिन खिचड़ी तथा सप्ताह में सात दिन परमल के साथ दूध दिया जा रहा है। संस्थान की ओर से अप्रैल 2013 से जुलाई 2013 तक किशनगंज क्षेत्र के भमूका, मोहदा, जगदेयपुरा, करवरीकलां, बामनदेह, हदीयादेह, खंडेला खेड़ी, लेहरूनी, करेरिया, सुवांस व दौलतपुरा गांवों के 71 अतिकुपोषित बच्चों को पूरक आहार दिया जा चुका है। इससे बच्चों में उपचार के बाद दोबारा अतिकुपोषित में नहीं आने से बचा जा सकेगा। *(यह रिपोर्ट इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप के अध्ययन का हिस्सा है)* **(विविधा फीचर्स)**